नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आत्मनिर्भर ऊर्जा की ओर भारत की निर्णायक छलांग

भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में एक ऐसी उपलब्धि हासिल की है, जो न केवल तकनीकी दृष्टि से ऐतिहासिक है, बल्कि देश की ऊर्जा सुरक्षा और वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए भी मील का पत्थर साबित हो सकती है. तमिलनाडु के कलपक्कम में स्थित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर का सफलतापूर्वक संचालन शुरू होना भारत के तीन चरणों वाले परमाणु कार्यक्रम के दूसरे चरण में प्रवेश का स्पष्ट संकेत है. यह उपलब्धि वर्षों के वैज्ञानिक परिश्रम, नीति-निरंतरता और रणनीतिक दूरदृष्टि का परिणाम है.

भारत का परमाणु कार्यक्रम हमेशा से संसाधनों की सीमाओं के बीच आत्मनिर्भरता की सोच पर आधारित रहा है. देश के पास यूरेनियम के सीमित भंडार हैं, लेकिन थोरियम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है. ऐसे में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर तकनीक भारत के लिए बेहद महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह न केवल ईंधन का अधिकतम उपयोग करती है, बल्कि नए ईंधन का उत्पादन भी करती है. यही वह कड़ी है, जो भारत को थोरियम आधारित तीसरे चरण की दिशा में आगे बढ़ने का रास्ता देती है.

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रमुख राफेल ग्रॉसी द्वारा इस उपलब्धि की सराहना और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दी गई बधाई इस बात का संकेत है कि भारत की यह सफलता वैश्विक स्तर पर भी मान्यता प्राप्त कर रही है. पेरिस स्थित अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी द्वारा इसे 'बड़ी तकनीकी उपलब्धि' बताया जाना भी इस दिशा में भारत की साख को और मजबूत करता है. यह केवल एक वैज्ञानिक सफलता नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता का भी संकेत है. फास्ट ब्रीडर रिएक्टर तकनीक अत्यंत जटिल और संवेदनशील मानी जाती है. रूस के अलावा बहुत कम देश इसे सफलतापूर्वक विकसित और संचालित कर पाए हैं. अमेरिका और जापान जैसे तकनीकी रूप से उन्नत देशों ने भी इस दिशा में अपने प्रयासों को सीमित कर दिया था. ऐसे में भारत का इस तकनीक में सफलता प्राप्त करना यह दर्शाता है कि देश अब उच्च स्तरीय वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी देशों की श्रेणी में खड़ा हो रहा है.

ऊर्जा के बढ़ते वैश्विक संकट और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बीच यह उपलब्धि और भी महत्वपूर्ण हो जाती है. स्वच्छ और स्थायी ऊर्जा के स्रोत के रूप में परमाणु ऊर्जा की भूमिका लगातार बढ़ रही है. भारत के लिए, जहां ऊर्जा की मांग तेजी से बढ़ रही है, यह तकनीक दीर्घकालिक समाधान प्रदान कर सकती है. इससे न केवल आयातित ईंधन पर निर्भरता कम होगी, बल्कि ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को भी मजबूती मिलेगी. हालांकि, इस सफलता के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं. परमाणु सुरक्षा, कचरे का प्रबंधन और जनस्वीकृति जैसे मुद्दे हमेशा महत्वपूर्ण रहेंगे. सरकार और वैज्ञानिक समुदाय को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस तकनीक का विस्तार पूरी पारदर्शिता और सुरक्षा मानकों के साथ किया जाए.

कुल मिलाकर, कलपक्कम में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर का सफल संचालन भारत के लिए एक निर्णायक क्षण है. यह केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर और टिकाऊ भविष्य की दिशा में एक मजबूत कदम है. यदि इस दिशा में निरंतरता बनी रही, तो भारत न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करेगा, बल्कि वैश्विक ऊर्जा मानचित्र पर एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरेगा.

राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति और नर्सिंग सेक्टर का भविष्य

ओजस्कर पाण्डेय

> यदि भारत को एक सशक्त और समावेशी स्वास्थ्य प्रणाली विकसित करनी है, तो नर्सिंग सेक्टर में निवेश, सुधार और नवाचार को प्राथमिकता देनी होगी. नर्सिंग सेक्टर का भविष्य भारत की स्वास्थ्य नीतियों से गहराई से जुड़ा हुआ है. एक सशक्त, प्रशिक्षित और प्रेरित नर्सिंग वर्कफोर्स ही सर्वजन स्वास्थ्य के लक्ष्य को प्राप्त कर सकती है. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, परंतु इसे वास्तविक सफलता तभी मिलेगी जब इसके प्रावधानों को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाएगा. यही भारत को एक स्वस्थ, सक्षम और विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में निर्णायक सिद्ध होगा. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 ने नर्सिंग सेक्टर के महत्व को स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हुए उसके विकास के लिए एक दिशा प्रदान की है. किंतु इस दिशा को वास्तविकता में बदलने के लिए ठोस और सतत प्रयासों की आवश्यकता है. नर्सिंग सेक्टर का सुदृढ़ीकरण केवल एक पेशेवर आवश्यकता नहीं, बल्कि देश की स्वास्थ्य सुरक्षा और सामाजिक विकास की अनिवार्य शर्त है. एक सक्षम, प्रशिक्षित और प्रेरित नर्सिंग वर्कफोर्स ही भारत को स्वस्थ भारत और विकसित भारत के लक्ष्य की ओर अग्रसर कर सकती है.

भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहाँ बढ़ती जनसंख्या, बदलती बीमारियों का स्वरूप और स्वास्थ्य सेवाओं की बढ़ती मांग ने मानव संसाधनों, विशेषकर नर्सिंग सेक्टर के महत्व को अत्यधिक बढ़ा दिया है. नर्सें केवल उपचार प्रक्रिया का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे मरीजों की निरंतर देखभाल, पुनर्वास, भावनात्मक सहयोग और स्वास्थ्य जागरूकता की मुख्य वाहक होती हैं. इसी कारण नर्सिंग को स्वास्थ्य प्रणाली की रीढ़ कहा जाता है. इसके बावजूद, भारत में नर्सिंग सेक्टर अभी भी कई संरचनात्मक चुनौतियों से जूझ रहा है.

इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 एक महत्वपूर्ण नीति के रूप में सामने आती है, जो न केवल स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार का लक्ष्य रखती है, बल्कि नर्सिंग सेक्टर के सुदृढ़ीकरण को भी प्राथमिकता देती है. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 का मुख्य उद्देश्य सर्वजन स्वास्थ्य कवरेज प्राप्त करना है, अर्थात प्रत्येक नागरिक को सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नीति ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि पर्याप्त और प्रशिक्षित मानव संसाधन के बिना स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता. वर्तमान में भारत में नर्स-जनसंख्या अनुपात लगभग 1.9 से 2 प्रति 1000 है, जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह कम से कम 3 प्रति 1000 होना चाहिए. इसके अतिरिक्त, विभिन्न आकलनों के अनुसार भारत को अभी भी लगभग 15 से 18 लाख अतिरिक्त स्वास्थ्यकर्मियों की आवश्यकता है, जिनमें नर्सों की बड़ी हिस्सेदारी है. यह स्थिति इस तथ्य को रेखांकित करती है कि नर्सिंग सेक्टर को मजबूत किए बिना स्वास्थ्य नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव नहीं है. हाल के वर्षों में भारत सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिनमें आयुष्मान भारत योजना विशेष रूप से उल्लेखनीय है.

इस योजना के अंतर्गत आयुष्मान भारत- हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर अब आयुष्मान आरोग्य मंदिर की स्थापना की गई, जिनका उद्देश्य प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करना है. इन केंद्रों में नर्सों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे न केवल उपचार प्रदान करती हैं, बल्कि रोग-निवारण, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाएँ और सामुदायिक जागरूकता जैसे कार्यों में भी अग्रणी भूमिका निभाती हैं. इस प्रकार नर्सिंग सेक्टर का दायरा अब केवल अस्पतालों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह समुदाय-आधारित स्वास्थ्य सेवाओं का केंद्र बन गया है. इसके बावजूद, नर्सिंग सेक्टर कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है. सबसे बड़ी समस्या है—नर्सों की कमी और उनका असमान वितरण. शहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक नर्सें उपलब्ध हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी भारी कमी है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं में असंतुलन उत्पन्न होता है. इसके अतिरिक्त, नर्सिंग शिक्षा की गुणवत्ता भी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है. कई निजी नर्सिंग संस्थानों में बुनियादी ढांचे, प्रशिक्षित फैकल्टी और क्लिनिकल प्रशिक्षण की कमी देखी जाती है, जिससे छात्रों की व्यावहारिक दक्षता प्रभावित होती है. परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में नर्सें कार्यक्षेत्र में प्रवेश करने के बाद अपेक्षित कौशल के साथ कार्य नहीं कर पातीं. एक और गंभीर चुनौती है—प्रशिक्षित नर्सों का विदेशों की ओर पलायन, जिसे ब्रेन ड्रेन कहा जाता है.

विकसित देशों में बेहतर वेतन, कार्य परिस्थितियाँ और पेशेवर सम्मान के कारण भारतीय नर्सें बड़ी संख्या में विदेश चली जाती हैं. इससे भारत में कुशल नर्सिंग वर्कफोर्स की कमी और बढ़ जाती है. इसके साथ ही, देश में नर्सों के कार्यस्थल पर लंबे कार्य घंटे, कम वेतन और सुरक्षा की कमी जैसी समस्याएं भी इस पेशे के प्रति आकर्षण को कम करती हैं.

बेलगाम खनन माफिया

दिलीप झा

मध्यप्रदेश में खनन माफिया इतना बेलगाम और बेखौफ हैं वह किसी को भी कहीं भी कुचलकर मार देता है और उस व्यक्ति का कुछ नहीं होता है. खनन में लगे ट्रैक्टर ट्राली के ड्राइवर की इतनी हिमाकत कि वह सिपाही को कुचल दें, यह बिना किसी राजनीतिक रसूखदार के कतई संभव नहीं है. सरकार का मतलब जनता की, जनता के लिए और जनता के द्वारा चुनी गई सरकार की अवधारणा जब खंडित होने लगे तो समझ लीजिए कि प्रशासनिक व्यवस्था लचर ही नहीं चरमराई हुई है.

पिछले तीन दशकों से पूरे प्रदेश में रेत माफिया अवैध खनन से सरकार को चूना लगा रहे हैं और प्रशासन अगर चुपचाप है तो यह गंभीर मामला है. इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता. खनन माफिया पूरे सिस्टम का उत्खनन कर रहा है और हमारा प्रशासनिक सिस्टम हाथ पर हाथ धरकर लाचार बना हुआ है तो यह शासन के लिए बेहद चिंताजनक है. जब जनता सरकार से नाउम्मीद होने लगे और यह कहने लगे कि भगवान ही मालिक है इस राज्य का तो समझ लीजिए कि जनता का सरकार पर से भरोसा टूटने लगा है. इससे भी कोई इंकार नहीं कर सकता कि लोगों का एक बार जब भरोसा टूट जाता है तो फिर उसे बनाने में वर्षों लग जाते हैं. सिपाही को कुचलकर मारने की घटना पूरे देश में आग की तरह फैल जाती है. पुलिस हमारी सुरक्षा के लिए है लेकिन जब वही सुरक्षित नहीं है तो हम और हमारे नेताओं कैसे सुरक्षित रहेंगे, यह एक यक्ष सवाल है. आखिर अपराधियों को खाद पानी देने वाले कौन लोग जो बीजेपी की छवि से खिलवाड़ कर रहे हैं. उन्हें चिन्हित करने कर बीजेपी से बाहर करने की नितांत आवश्यकता है. हैरानी की बात है कि ट्रैक्टर से वनरक्षक हरिकेश गुर्जर की कुचलकर हत्या करने वाला ड्राइवर आधा किलोमीटर दूर पेट्रोल पंप पर ट्रॉली खाली किया और खेत में कपड़े बदलकर फरार हो गया. इस घटना ने जिला प्रशासन के कामकाज पर सवाल खड़े कर दिए हैं. अपराधियों के सामने जब जिला प्रशासन घुटने टेक तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है मुरैना की राजनीति का अपराधीकरण हो गया है. लेकिन हमारी पूलिस इनका कुछ नहीं कर पा रही है. वर्ष 2015 में भी खनन माफिया ने एक पुलिसकर्मी को कुचलकर मार दिया था. ग्वालियर संभाग के कई जिलों के अलावा जबलपुर, सिवनी, नरसिंहपुर, उमरिया, शहडोल, बालाघाट, पन्ना, छतरपुर, नर्मदापुरम, दमोह, विदिशा एवं सीहोर में खनन माफिया के कारनामे किसी से छिपे नहीं हैं.

कर्ज में डूबा मध्यप्रदेश

चार्वाक ने कहा था कि अगर स्वर्ग में भुगतान के लिए यदि उधार लेकर भी घी खाना पड़े तो खाना चाहिए. मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार ने तो इस जन्म में ही उधार लेकर घी पीना शुरू कर दिया है, क्योंकि उसे मालूम है कि इस कर्ज को चुकाने के लिए तो प्रदेश की जनता को ही टैक्स के कोल्हू में पीस कर तेल निकाला जाने वाला है. सरकार विकास के ऊंचे दावे कर रही है, तब हकीकत यह है कि वर्ष 2025-26 के वित्त वर्ष में प्रदेश सरकार ने हर रोज 250 करोड़ रुपए कर्ज लेकर सरकारी ढांचे को चलाया है. इस वित्त वर्ष में सरकार ने 91500 करोड़ रुपए का कर्ज लिया है. स्थिति यह है कि प्रदेश पर कुल कर्ज 5.56 लाख करोड़ को पार कर गया है. प्रदेश की कुल जनसंख्या 9 करोड़ के आसपास है. इसका अर्थ यह है कि प्रदेश का प्रत्येक नागरिक पर 6.17 लाख का कर्जदार है. दूसरी ओर अभी विधानसभा में प्रस्तुत आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार प्रदेश में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 1.69 लाख रुपये है. इसका अर्थ यह है कि यदि प्रदेश के सारे नागरिकों की सारी आय भी कर्ज चुकाने के लिए दी जाए तो भी इसे चुकाने में चार साल लगेंगे. प्रश्न यह कि क्या ऐसा करने पर प्रदेश कर्ज मुक्त हो जाएगा? ऐसा इसलिए नहीं हो पाएगा, क्योंकि वर्तमान कर्ज पर 12 प्रतिशत की ब्याज दर से हर साल 66,720 करोड़ रुपए तो ब्याज ही देना पड़ेगा. दूसरी बात यह है कि क्या राज्य सरकार नया कर्ज लेना बंद कर देगी? वह तो अप्रैल महीने में ही फिर कर्ज लेने का प्रस्ताव तैयार कर रही है. यह कर्ज भाजपा सरकार प्रदेश की जनता के कल्याण के लिए ले रही है? तो फिर प्रदेश में विकास कहां है? किसानों को मंडियों में उनकी खून पसीने की मेहनत की कमाई की कीमत नहीं मिल रही है. मजदूरों कर्मचारियों को न्यूनतम वेतन नहीं मिल रहा है. आशा उषा, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अपने मानदेय वृद्धि के लिए लड़ रही हैं. कर्ज के इस पैसे से जो बिल्डिंग बनाई जा रही है, नेताओं, नौकरशाहों और ठेकेदारों की तिकड़ी के भ्रष्टाचार से बनने वाले पुल उद्घाटन के साथ ही टूट रहे हैं. सड़के पहली ही बारिश में धंस रही हैं, बाँध टूट रहे हैं, भवनों की छतें पहली ही बारिश में टपक रही हैं जबकि सच्चाई यह है कि स्कूलों में शिक्षक नहीं हैं, अस्पतालों में डॉक्टर नहीं हैं, सरकारी विभागों में लाखों पद खाली पड़े हैं. प्रदेश की जनता के गाढ़े पसीने की कमाई से इस कर्ज के बोझ को उतारा जाएगा, यह एक बड़ा सवाल है.

सीबीएसई शिक्षकों की जनगणना ड्यूटी क्यों?

निजी गैरअनुदानित सीबीएसई स्कूलों के शिक्षकों को जनगणना ड्यूटी में लगाने का कोई औचित्य इसलिए नहीं है क्योंकि वह अपना शैक्षणिक दायित्व निभाने में व्यस्त हैं. अप्रैल में उनकी आंतरिक परीक्षाएं होती हैं. फिर कक्षा 9 व 10 के लिए नया सत्र शुरू हो जाता है. ये शिक्षक बोर्ड की उत्तरपत्रिकाओं को जांचने में लगे हैं. कुछ शिक्षक विद्यार्थियों के एडमिशन की तैयारियों में व्यस्त हैं. इसके अलावा छपी हुई पाठ्यपुस्तकों के बगैर ही कक्षा 9 की पढ़ाई शुरू हो चुकी है. कक्षा 10 वीं की द्वितीय बोर्ड परीक्षा की तैयारी भी करनी है.

अप्रैल की इस गर्मी में शिक्षक सुबह 8 बजे स्कूल पहुंच जाते हैं और बिना विश्राम किए लगातार कार्यरत रहते हैं. घर लौटने पर भी वह वॉट्सएप से जुड़े रहते हैं और बकाया काम पूरा करते हैं. अप्रैल का महीना सीबीएसई शिक्षकों के लिए अत्यंत व्यस्त और जिम्मेदारी भरा रहता है. अब किंडरगार्टन से भी स्टाफ के नाम मंगाए जा रहे हैं जबकि नतीजों और नई एडमिशन प्रक्रिया के बीच मुश्किल से 20 दिनों का फासला रहता है. सरकार को चाहिए कि सबसे पहले सभी सरकारी व शासकीय अनुदान पर चलने वाले स्कूल-कॉलेजों के शिक्षकों व गैर शैक्षणिक स्टाफ का इस्तेमाल करें. इसके बाद केंद्र व राज्य सरकार के कर्मचारियों को जनगणना के काम में लगाएं. संभवतः अधिकारियों को गलतफहमी है कि सभी शिक्षक अप्रैल-मई में छुट्टियां बिताते हुए घर में चैन की नींद सो रहे हैं. सीबीएसई शिक्षकों के साथ ऐसा नहीं है. उनके और सरकारी स्कूल शिक्षकों के काम में बहुत अंतर है. पढ़ाई का स्तर और रिजल्ट ऊंचा रखने के लिए सीबीएसई शिक्षकों को व्यस्त रहते हुए लगातार परिश्रम करना पड़ता है. चूंकि सीबीएसई शिक्षक धरना देने या किसी मंत्री का घेराव करने जैसे आंदोलन नहीं करते, इसलिए उनकी कोई सुनवाई नहीं है. जब वह सरकारी या अर्धसरकारी नौकरी में नहीं हैं तो उनसे चुनाव और जनगणना का काम जबरन क्यों लिया जाना चाहिए? यदि नॉन ग्रैंटेड सीबीएसई स्कूलों पर दबाव डाला गया तो वह अदालत का दरवाजा खटखटा सकते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

चुनाव आयोग के पास मौजूद शक्ति सीईसी ज्ञानेशकुमार ने दिखाई सख्ती

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार अवश्य ही महाज्ञानी होंगे तभी तो एकसाथ 5 राज्यों में चुनाव का संज्ञान ले रहे हैं. चुनाव लोकतंत्र का ज्ञान यज्ञ होता है, जिसमें वोटों की आहुति डालने से नई सरकार जन्म लेती है. आपने महाभारत में पढ़ा होगा कि यज्ञकुंड से ही द्रौपदी का जन्म हुआ था.'

हमने कहा, 'आप सीधे चुनाव चर्चा कीजिए. ज्ञान चर्चा क्यों कर रहे हैं? ज्ञानेश कुमार ने कहा कि इस बार चुनाव भय रहित, हिंसा रहित, धमकी रहित, प्रलोभन रहित, छापा रहित के अलावा बूथ व सोर्स जामिंग रहित होकर ही रहेंगे. इस वक्तव्य में ज्ञानेश कुमार के ज्ञान के अलावा संकल्प भी नजर आता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ज्यादा ज्ञान होना भी खतरनाक होता है. ज्ञान के साथ विनम्रता, उदारता व सदाशयता रहनी चाहिए. फलों से लदे वृक्ष जिस तरह झुक जाते हैं, वैसा ही रवैया ज्ञानसंपन्न व्यक्ति का भी रहना चाहिए.'

हमने कहा, 'पावर के साथ गर्व आ ही जाता है. चुनाव के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त के अधीन सभी प्रशासनिक मशीनरी, बड़े-बड़े अधिकारी और सुरक्षा बल आ जाते हैं. उनके सामने कोई नेता या सांसद भी तीन-पांच नहीं कर सकते. वह जिसे चाहे घुड़की दे सकते हैं. ज्ञानेश कुमार ने भी यही किया. जब टीएमसी सांसद डेरेक ओ ब्रायन, पूर्व सांसद साकेत गोखले, सांसद व पूर्व पत्रकार सागरिका घोष और मेनका मुरुस्वामी मुख्य चुनाव आयुक्त से पूछने गए कि बंगाल की मतदाता सूची से 91,00,000 लोगों के नाम क्यों काटे गए तो ज्ञानेश कुमार ने कहा- गेट लॉस्ट अर्थात दफा हो जाओ. यहां से चलते बनो. इस संबंध में इलेक्शन कमीशन ने सफाई दी कि मुख्य चुनाव आयुक्त की ओर से ऐसा कुछ भी नहीं कहा गया. एक अन्य मामला कूचबिहार साउथ के जनरल आब्जर्वर अनुराग यादव का है जिन्हें डांटते हुए ज्ञानेश कुमार ने कहा कि अपने घर वापस जाओ. इससे अनुराग को बुरा लगा जो कि उत्तरप्रदेश की योगी सरकार में प्रधान सचिव रैंक के उच्चाधिकारी हैं. उन्होंने जवाब दिया कि आप हमसे इस तरह का अपमानजनक व्यवहार नहीं कर सकते. हमने सरकारी सेवा में 25 वर्ष दिए हैं. आप इस तरह नहीं बोल सकते. इस पर सीईसी ने उन्हें पद से हटा दिया.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12225 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		■	3	4	5	6
7		■	■	8			
9		10	11	■	■	12	
■	13			■	14	■	
15	■		■	16		17	■
18	19	■	■	20			21
22			23	■		■	
24		■	25				

बाएं से दाएं
1. विद्वान स्त्री, पंडिता स्त्री (सं.) 3. वह कर जो निर्दिष्ट आमदनी होने पर सरकार को दिया जाता है, इन्कम टैक्स 7. दशा, अवस्था, समाचार 8. जैसा था वैसा ही (सं.) 9. रास्ते में पथिकों को लूटने का काम (उर्दू) 12. एक अन्न, चणक 13. सिंचाई या यातायात के विचार से किसी नदी या जलाशय से निकाला गया जलमार्ग 16. जिसमें सुनने की शक्ति न हो, बहरा 18. किशमिश बादाम आदि सुखाए हुए बढ़िया फल 20. वह पथरीला मैदान जहां पेड़ आदि न हो (उर्दू) 22. हिचकना टीस मारना, ठन-ठन शब्द होना 24. नाड़, गर्दन, नारी 25. उकता कर हिलना-डोलना,

ऊपर से नीचे
1. मटरगश्ती, घूमकर मनोरंजन करना, भिक्षुओं का मठ (सं.) 2. नव-वधू, नवोढ़ा स्त्री 3. आमदनी, धनागम, लाभ(सं.) 4. जिस प्रकार, जैसे (सं.) 5. बख्तर, वर्म, मोटा छिलका (सं.) 6. सुर्खी लिए हुए, कुछ लाल 10. विष, गरल 11. जल, पानी 14. सबसे अधिक या ज्यादा (मैक्सिमम) 15. मरोड़ना 16. शक्ति, सामर्थ्य, ऐंठन, मरोड़ा 17. दांत (सं.) 19. बंदर 21. नीच, क्षुद्र (उर्दू) 23. नासिका, प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु

Solution 12224

वि	ह	ग	म	■	सं	क	र
न	स	■	दा	■	वा	द	क
य	■	नी	ल	■	द	■	म
■	र	■	स	र	दा	र	■
पै	ज	नी	■	■	ता	■	ठ
गं	वा	र	■	क	■	सा	ह
ब	ड़ा	■	श	ह	र	या	र
र	■	स	ह	वा	स	■	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा. जीवन आनन्ददायक रहेगा. अध्ययन के प्रति आकस्मिक यात्रा का योग है, आर्थिक संसाधनों में सामान्य सुधार होगा. पारिवारिक समस्याओं से कष्ट होगा. वर्ष के मध्य में राजनीति के क्षेत्र मेंपरिवर्तन हो सकता है. लाभप्रद समाचार मिलेगा.

मेष और वृश्चिकराशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम के बाद आंशिक लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आर्थिक संसाधनों मेंसुधार होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा में यथेष्ठ सतर्कता बांछनीय. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनीति में मित्र द्वारा सहयोग प्राप्त होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, गौरवर्ण का लंबे कद का दुबला पतला एवं बुद्धिमान और जिद्दी-मनमौजी होगा, किसी की नहीं सुनेगा, मित्रों की संख्या अधिक होगी, इंजीनियरिंग में तरक्की करेगा, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- सामाजिक कार्यों में शामिल होकर मन को खुशी मिलेगी, भावनात्मक संबंध बढ़ेंगे, अधिक वाकपटुता से काम बिगड़ सकता है, वार्तालाप संयमित रखें.

वृषभ- कार्यक्षेत्र में सहयोग लाभदायी रहेगा, यात्रा मे उठाईगीरों से सावधान रहें, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त हो सकता है.

मिथुन- अधिकारियों का मेलजोल लाभदायक रहेगा, इच्छित कार्यो की रूपरेखा बनेगी, सफ्लता प्राप्त होगी, मन में हर्ष और उत्साह बना रहेगा.

कर्क- मन की बात मित्रों से कह दें, तनाव कम होगा, पारिवारिक यात्रा हो सकती है, यश मिलेगा. नौकरी में व्यस्तता रहेगी, तनाव की स्थिति से बचें.

सिंह- नये कार्य के लिये जरूरी धन की व्यवस्था कर लेंगे, मानसिक प्रसन्नता होगी, व्यापार में सफ्लता प्राप्त होगी, परेशनियों का निवारण होगा.

कन्या- घरेलू आयोजन में भाग लेंगे, मातृपक्ष से विशिष्टजनों का समाचार मिलेगा, मतभेदों से बचने का प्रयास करें, मार्गदर्शन मिलेगा.

तुला- मित्रों से किया गया वायदा निभाने में मुश्किल होगी, व्यापार में सफ्लता मिलेगी, महत्वपूर्ण समाचारों की योजना बनेगी, जरूरी विचार विमर्श होगा.

वृश्चिक- रूखे व्यवहार से परिचितों को नाराज कर सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, अतिथि आगमन होगा, मान सम्मान की प्राप्ति होगी.

धनु- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, दिखावे के कारण कर्ज हो सकता है, इष्ट मित्रों एवं परिजनों के सहयोग से कुछ कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

मकर- विपरीत माहौल में खुद के लिये अनुकला बना लेंगे, संतान संबंधी कार्यो में व्यस्तता रहेगी, नवीन कार्यो के प्रति मन का झुकाव रहेगा.

कुम्भ- प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझने की उम्मीद है, अधिनस्थ लोगों का सहयोग मिलेगा, बेरोजगारों को प्रयास करने पर रोजगार मिलेगा.

मीन- कारोबारी विस्तार की संभावना, आर्थिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, कुटुम्बियों का सहयोग प्राप्त होगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

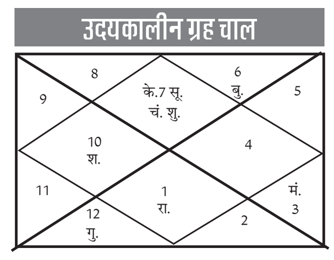

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2083 वैशाख कृष्ण अष्टमीं भृगुवासरे रात 7/35, पूर्वाषाढ़ नक्षत्रे दिन 8/23, शिव योगे दिन 3/43, बालव करणे सू.उ. 5/45, सू.अ. 6/15, चन्द्रचार धनु दिन 2/52 से मकर, पर्व- श्रीशीतलाष्टमीं व्रत, शु.रा. 9, 11, 12, 3, 5, 7 अ.रा. 10, 1, 2, 4, 6, 8 शुभांक- 2, 4, 8.

व्यापार भविष्य

वैशाख कृष्ण अष्टमीं को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से गुड़-खांड, शक्कर, नारियल, छुहारा, बादाम, कुम्भ के भाव में तेजी होगी, अलसी, अरंडी, सींगदाना, में नरमी रहेगी, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन, में समता रहेगी, भाग्यांक 3787 है.

SUDOKU 7357

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7356

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7